FEBRUARY

13 MONDAY

WK 07 DAY 044-321

06/02/24

Lecture Notes

B.A Part III Paper 7th

Topic — Introduction in Industrial Psychology.

Dr. Ku. Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept. of Psychology

Q. 1 Introduction in Occupational Psychology. (Industrial)

2/11

Ans —

औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psy.) का विकास 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ। मशीनयुग की क्रांतिकारी प्रगति औद्योगीकरण आदि के कारण उद्योग-धन्धों में मालिकों तथा मजदूरों, औद्योगिक स्थितियों आदि में सुधार लाने के लिए औद्योगिक मनोविज्ञान का एक व्यवहृत मनोविज्ञान के रूप में विकास हुआ। इसमें औद्योगिक समस्याओं, मजदूरों की आर्थिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं का श्रमिकों के औद्योगिक कार्य में संलग्न व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। ब्लम Blum (1956) के अनुसार :—

" औद्योगिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो व्यवसाय तथा उद्योग में मानविय संबंधों जैसी समस्याओं के अध्ययन में मनोवैज्ञानिक तथ्यों तथा सिद्धांतों का उपयोग करता है।"

औद्योगिक मनोवैज्ञानिक Harrel ने औद्योगिक मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र को इस प्रकार प्रस्तुत किया :—

(1) औद्योगिक मनोविज्ञान का संबंध कार्य के भौतिक पक्ष से है (जैसे; प्रकाश एवं तापमान) और यह ज्ञात करने से है कि किस प्रकार कार्योत्पादन एवं सुरक्षा पर इस भौतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

(2) दूसरा मुख्य उद्देश्य इस अध्ययन का मानवीय संबंधों के सिद्धांतों एवं प्रयासों की जानकारी प्राप्त करना है।

(3) इसके द्वारा कार्य में लगे व्यक्तियों की मनोवृत्तियों एवं प्रेरणाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन से कर्मचारी के मनोबल, अरोचकता और रुचि के कारणों की जानकारी प्राप्त की जाती है।

(4) औद्योगिक मनोवैज्ञानिक के द्वारा उन कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया जाता है जो कार्य करते-करते कुसमायोजित होने लगते हैं।

(5) इसका मूल उद्देश्य कर्मचारी तथा कार्य, कर्मचारी तथा निरीक्षक, कर्मचारी तथा प्रबन्धक, कर्मचारी तथा कर्मचारी के संबंधों का अध्ययन करना है।

औद्योगिक मनोविज्ञान की समस्याएँ 4 प्रमुख स्तम्भों पर आधारित है :—

(1) कर्मचारी तथा कार्य (Worker & Work) :—
कार्य का संबंध उत्पादन और मशीन से होता है। अच्छे उत्पादन के लिए और मशीन की टूट-फूट तथा दुर्घटना से बचने के लिए प्रत्येक कार्य पर उचित एवं सुयोग्य कर्मचारी की नियुक्ति की जानी चाहिए। इसलिए इस समस्या के अन्तर्गत कर्मचारी - विश्लेषण (worker analysis) तथा कार्य - विश्लेषण (work - analysis) का अध्ययन किया जाना चाहिए।

(2) कर्मचारी तथा निरीक्षक (Worker & Supervisor) :—
यदि निरीक्षक का व्यवहार कर्मचारी को सन्तुष्ट रखेगा तो कर्मचारी मेहनत से अपने कार्य को निश्चित समय में पूरा कर देगा। निरीक्षक को हमेशा कर्मचारी की भौतिक और मानवीय आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। अधिक उत्पादन के लिए और देश की प्रगति हेतु कर्मचारी और निरीक्षक के बीच की खाई हमेशा पटी रहनी चाहिए।

(3) कर्मचारी तथा प्रबन्धक (Worker & Management) :—
मिल - मालिक और उसके द्वारा नियुक्त किए हुए व्यक्ति, जिनके ऊपर कारखाने के संचालन की पूरी जिम्मेदारी होती है, प्रबन्धक - वर्ग में आते है। यदि कारखाने का प्रबन्धक सन्तोषजनक नहीं होता तो कर्मचारी धीरे - धीरे अपने कार्य में रुचि लेना कम करने लगते हैं। उदाहरण के लिए यदि, प्रबन्धक कर्मचारी के स्वास्थ्य और उसकी चिकित्सा का ठीक प्रबन्ध नहीं कर पाते है तो वह धीरे - धीरे आक्रामक एवं असंतोषजनक व्यवहार करने लगते हैं।

कार्य के घंटे, मशीनों की दशा, कारखाने का भौतिक वातावरण और अन्य आवश्यकताओं का यदि ठीक इन्तजाम नहीं होता तो कर्मचारी कार्य के प्रति इमानदारी नहीं बरतता। कर्मचारी के साथ पक्षपात नहीं करना चाहिए, उसे हीन और मशीन नहीं समझना चाहिए। वह भी इन्सान है, उसे भी जीने का अधिकार है और उसकी भी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, इन वास्तविकताओं पर प्रबन्धकों को पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए।

④ कर्मचारी तथा कर्मचारी (Worker & Worker):—

इस प्रगति के युग में जब औद्योगिक अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा है; मालिक यह नहीं चाहता कि मजदूर-वर्ग एक रहे। चूंकि मालिक यह भली-भाँति जानता है कि मजदूर की एकता उसके शोषण को उखाड़ फेंकेगी, उसकी बनायी हुई पूँजीवादी व्यवस्था बिखर जाएगी। इसलिए मिल मालिकों और मशिनों के ठेकेदार (उद्योगपति) सदैव इस प्रकार का चुग्गा डालता रहता है कि मजदूर आपस में लड़ते रहें, किसान मुकदमेबाजी में फँसा रहे और मध्यम वर्ग ऐश-आराम की जिन्दगी के नशे में रहे। उद्योगपतियों के इस नीति के कारण देश की अर्थव्यवस्था अव्यवस्थित हो जाती है और कुछ मुट्ठी भर उद्योगपति देश के ~~मालिक~~ सम्पूर्ण पूँजी के मालिक बन जाते हैं।

अति औद्योगिक दौर में मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है, भारत जैसे विकासशील देश तथा अधिकसीत देश तक में मजदूर को राष्ट्र की सम्पत्ति समझ कर उसको उद्योग-धन्धों तथा व्यवसायों की एक महत्वपूर्ण इकाई समझा जा रहा है। औद्योगिक मनोविज्ञान में इस नए दृष्टिकोण के कारण तथा अपने देश में सरकारी की नई औद्योगिक नीति के कारण अनेक सुधार हुए हैं। आज भारत में कर्मचारियों के लिए निवास-स्थान, मनोरंजन-साधन, अस्पताल, स्कूल आदि की उचित प्रबन्ध कर दिया गया है। उचित कार्य के लिए उचित कर्मचारी, उचित कर्मचारी के लिए उचित कार्य के दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण माना जाता है।